स्कंद पुराण में वर्णित अरुणाचल माहात्म्य

कल्पना पंत

प्रोफेसर, हिंदी विभाग, पण्डित ललित मोहन शर्मा परिसर ऋषिकेश.

सार

हिंदू धार्मिक साहित्य में वर्णित अठारह पुराणों में स्कंद पुराण सबसे अंतिम और वृहद् पुराण माना जाता हैं। आचार्य शंकर ने जिन मतों को मान्यता दी उनमें से एक के आराध्य एवं उपास्य देव स्कंद हैं। स्कंद असत् वृत्तियों के असत् के और असुरों के शत्रु हैं। परम तत्व स्कंद हैं देवव्रत के अनुसार भूत भवन शंकर के आत्मक हैं -षडानन स्कंद जो देवों के सेनापति हैं। कहा जाता है कि इसकी रचना सातवीं शताब्दी में हुई थी। एक प्रकार से यह पूर्ववर्ती पुराणों का पुनर्संपादित संस्करण हैं जिसमें भारत भर के तीर्थों, आचार विचार, धार्मिक आख्यानों और सांस्कारिक परम्पराओं का विस्तृत विवेचन हैं। यह पुराण पूरे देश का भौगोलिक वर्णन प्रस्तुत करता हैं। स्कंदपुराण का मूल रचनाकाल सातवीं शताब्दी माना जाता है, पर इसमें समय-समय पर सामग्री जुड़ती गई इसके वृहदाकार का यही कारण हैं।

यह खण्डात्मक और संहितात्मक दो स्वरूपों में उपलब्ध हैं। दोनों स्वरूपों में 81-81 हजार श्लोक परंपरागत रूप से माने गये हैं। खण्डात्मक स्कन्द पुराण में क्रमशः माहेश्वर, वैष्णव, ब्राह्म, काशी, अवन्ती (ताप्ती और रेवाखण्ड) नागर तथा प्रभास -- ये सात खण्ड हैं। संहितात्मक स्कन्दपुराण में सनत्कुमार, शंकर, ब्राह्म, सौर, वैष्णव और सूत - छः संहिताएँ हैं।

स्कंद महापुराण का प्रथम खंड माहेश्वर खंड हैं। माहेश्वर खंड में केदारनाथ का माहात्म्य हैं।माहेश्वर खंड के तीन उपकरण हैं- केदारखंड कुमारी खंड और अरुणाचल माहात्म्य। केदारखंड में पैंतीस अध्याय हैं, कुमारी खंड में छियासठ अध्याय हैं, अरुणाचल महात्म्य के पूर्वार्धि में तेरह और उत्तरार्ध में चैंबीस कुल सैंतीस अध्याय हैं।1

अरुणाचल महात्म्य अरुणाचल वासी योगीराज की जय से प्रारंभ हुआ हैं -

ललाटे त्रैपुण्डी निटिलकृतकस्तूरीतिलकः स्फुरनमालाधारः
स्फुरितकपिकौपीनवसनः।

दधानो दुस्तारं शिरसि फणीराजं शशिकलां प्रदीपः वैषामरुणगिरियोगीविजयते।।।2

व्यास जी का कथन है तदनन्तर नैमिषारण्य निवासी ऋषिगण ने ऋषि सूत जी से कहा हम नैमिष में रहते हुए आप से अरुणाचल का माहात्म्य सुनने की इच्छा रखते हैं। सूत जी ने उत्तर दिया पुरा काल में ब्रह्म से सनत ऋषि ने अरुणाचल का माहात्म्यपूछा था। इस प्रसंग को भक्ति पूर्वक सुनने से मानव गण का पाप नष्ट होता है। आप सब लोग एकाग्र होकर सुनें। अब मैं अरुणाचल का माहात्म्य कहता हूँ। पूर्व काल में ब्रह्मा से सनक ऋषि ने इस संबंध में जिज्ञासा की थी किहे दयानिधि! इस भूमंडल में जितने भी दिव्य मानुष सिंद्ध और संबंधित लिंग विराजित हैं -उन सब का वर्णन बताएं। तब ब्रह्मा जी ने योग बल से हृदय को प्रकृतिस्थ करके अपने विनीत पुत्र सनक का स्मरण किया। ध्यान द्वारा शिव के दर्शन से उनके शरीर पुलकित हो गया। ऐसी स्थिति में उन्होंने गदगद वाणी से कहना आरंभ किया जिन शिव की करुणा छल हीन है, जो अरुणादि संबोधन से संबोधित होते हैं जो तेज स्वरुप हैं उनका पूर्व काल में जिस प्रकार से आविर्भाव हुआ था, उस अद्भुत आविर्भाव का वर्णन करता हँ। तुम श्रवण करो।

जब सदाशिव ने यह संकल्प लिया कि मैं अनेक हो जाऊं तभी उस संकल्प करने वाले विश्वातिक्रमी शिव से मैं तथा नारायण उत्पन्न हो गए। हममें एक बार विवाद हुआ हम दोनों के बीच हुए विवाद से शिव चिंतित तो हुए हमारे अहंकार को नष्ट करने के लिए वे हम दोनों के बीच एक अग्निस्तंभरुपेण समुद्भूत हो गये। व्यवस्था की कि जो भी कोई इस स्तंभ के आदि अंत का पता लगा सकेगा, उसे ही अधिक बली तथा श्रेष्ठ माना जायेगा लेकिन हम दोनों में से कोई भी इस के आदि अंत का भेद न पा सका। अशेष आत्मा शंभू देव ने हमें इस अहंकार से हटाकर अपनी महिमा का प्रकाशन कर हमारे समस्त अहंकार का हरण कर लिया। हम दोनों ने श्रद्धा भक्ति पूर्वक शंकर का स्तव करके प्रणाम किया शंभू हमसे प्रसन्न हो गए और उनके वर मांगने को कहने पर मैंने कहा हे देव! आपके तेज से समस्त पृथ्वी संतापित होकर चराचर की उत्पत्ति में समर्थ नहीं हैं। हे देवाधिदेव! आप अरुणाचल नामक स्थान लिंग हो जाए तथा समस्त लोगों के प्रति अनुग्रह करके अपने इस तेज को समेट लीजिए जो मानव भक्ति भाव से अरुणाचल नामक इस ज्योतिर्लिंग को प्रणाम करेगा वह देवगण से भी श्रेष्ठ होगा।

पृथ्वी च सकला चैव तप्यमाना तवौंजसा।
चराचरसमुत्पत्तिक्षमा नैव भविष्यति।।

उपसंहृत्य तेजः स्वमरुणाचलसञ्ज्ञया। भवस्थावरलिङ्ग त्वं लाकानुग्रहकारणात्।।

ज्योतिर्म्रमिदंरुपंरुणाचलसञ्ज्ञितम्। ये नमन्तिनरा भक्त्यातेभवन्त्यमराधिका।।

सेवन्तांसकलालोकाःसिö◌ाश्चपरमर्षयः।
गणाश्चविविधाभुमौमानुषं भवमास्थिता।।3

इस भूमि तल स्थित समस्त लोग यहां तक की सिद्ध, ब्रह्मर्षि अन्य गण देवता मनुष्य भाव प्राप्त कर आपकी सेवा करेंगे। आपकी सेवा के लिए विविध फलों से झुकी शाखा वाला देव वृक्ष कल्पतरु यहां के दिव्य उद्यान में उगे। आपके लिंगदेह अरुणाचल के श्रृंग का सूर्यदेव कभी दक्षिणायन तो कभी उत्तरायण गमन काल में कभी लंघन न करे। हे देव! आप सर्वव्याधिनाशक सत्ता प्रदान कर पृथ्वी तल पर दृश्य लिंग के रूप में अवस्थान करिये। तदनंतर अरुणाचल पति शंकर ने तथास्तु कहकर ब्रह्मा के वाक्य को स्वीकार किया तत्पश्चात लक्ष्मीपति विष्णु ने उन विधायक शिव को प्रणाम किया और कहा हे अरुणाचलाधीश! आपके इस आवास के निकट मंदिर, गृह मंडप, कूप, जलाशय आदि प्रतिष्ठित करने वाले का पुनर्जन्म नहीं होगा।

आरामं मण्डपञ्चापिऽपि कूपं विविधशोधनम्।

कुर्वतामरुणाद्रीशसन्निधाने पुनर्भव।।4

हे सदाशिव! मैं तथा ब्रह्मा दोनों आपके चरण कमल के समीप अवस्थित हैं जो पुष्कर आदि महा मेघ हाथी के आकार के जलबिंदु की वर्षा कर के तीनो लोकों को भर देते हैं वे भी अरुणाचल की घाटी में विश्राम करते हैं। जब प्रकृति समस्त प्राणी वर्ग का संहार करके उनको अपने गर्भ में धारण करती है तब इस अरुणाचल पर पृथ्वी के सभी भावी बीज स्थित रहते हैं।

गजप्रमाणैः पृषतेः पुरयंतो जगत्त्रयम।

पुष्कराद्या महामेघा विश्रान्ता यस्यसानुनि।।

प्रवृत्ते भूतसंहारे प्रकृतौ प्रतिसंचरे।

भविष्यतयर्वबीजालिनि निषेदुर्यत्र निश्चयम्।।5

प्रलय के उपरांत समस्त वेदाध्ययनादि, आगम तथा वेदआदि समस्त शास्त्र में विद्यमान कलाविद्यादि समस्त जटाधारी मुनि गण इन सब का आश्रय स्थल अरुणाचल हैं। पंच ब्रह्ममय,

पंचाक्षर शरीर धारी मंत्र में आकार रूपी पीठ पर अरुण नाद आत्मा सदाशिव ही अरुणाचल के रूप में विराजमान हैं। यह सदा अष्ट विधि लिंग रूपेण प्रकाशमान हैं। यह सर्व आदि अष्टमूर्ति में विद्यमान रह कर अष्ट सिद्धि प्रदान करते हैं। सिद्ध लोग अपना- अपना स्थान त्याग कर के तथा सुरेश्वर गण सुमेरु पर्वत त्याग करके मुक्ति पाने हेतु अरुणाचल में निवास करते हैं। इस प्रकार इस प्रकार वसुंधरा में जो कुछ पूर्ण परिपाक दृष्टिगत होता है वह सभी अरुणाचल में समवेत रहता है तथा यह अरुणाचल भक्तगण को परमा भक्ति पद भी हैं। यहां तक कि परम पवित्र कैलाश तथा मेरु स्थित देवता सर्व विधि वर प्रदाता शोण शैलात्मा, शंभू पूजा करते हैं। अरुणाचल की विभूति का वर्णन करते हुए गौतम ऋषि ने देवी अंबिका के द्वारा अरुणाचल का महत्व पूछने पर कहा कि हे अनवद्य अंगों वाली, यह दुर्वृत्तक्षयकारक पहले कहे गए अरुणाचल महात्म्य को सुनें। हे देवी! पूर्व काल में अरुणाचल पर यह शिवलिंग जैसे आविर्भूत हुआ था। करोड़ों मुख से भी उस प्रसंग को कहकर समाप्त नहीं किया जा सकता। ब्रह्मा भी करोड़ों मुखों द्वारा इस अरुणाचल की महिमा कह सकने में समर्थ नहीं हैं।6

पंचमोध्याय में वर्णित है कि पूर्व काल में ब्रह्मा, विष्णु, इंद्र, चंद्र, सूर्य अग्नि इत्यादि ने अष्ट सिद्धि लाभार्थी इन अरुणाचल का पूजन किया था। सिद्ध, चारण, गंधर्व, यक्ष, विद्याधर, सर्प पक्षी तथा दिव्य मुनि गण एवं सिद्ध योगी गण ने अपने-अपने पाप की निवृत्ति तथा इष्ट सिद्धि के लिए भगवान अरुणाचलपति की आराधना की थी। इनके दर्शन से पाप नाश होता है तथा वांछित अर्थ की प्राप्ति होती है।7 यदि मनुष्य दूर से भी सोनागिरी इस नाम का कीर्तन करता है तब भगवान शिव शंकर उसे मुक्ति प्रदान करते हैं। तेजस्तंभमय विख्यात अरुणाचल का ध्यान करके योगी गण ने मोक्ष लाभ किया है। यहां पर जो कुछ दान, होम तथा यज्ञ किया जाता है वह सब अक्षय हो जाता है एक समय योगियों के योग में विघ्न उत्पन्न करने के लिए इंद्र की प्रार्थना पर ब्रह्मदेव ने कमनीय रमणी की सृष्टि की उस पर ब्रह्मा मोहित हो गए लेकिन ब्रह्मा उस ललना के प्रदक्षिणा करने पर उसको वहां से जाने का उपक्रम करते देख चार मुख वाले हो गए और पक्षी रूप में जाती हुई उस बाला का पीछा करने लगे। अप्सरा ने पक्षी रूपी ब्रह्मा को आते देख कर अरुणाचल की शरण ली। उसने कहा हे शरण्य ब्रह्मा विष्णु जी भी आप के अंत को नहीं जान सके।8 हे अरुणाद्रीश! मेरी रक्षा करें। रोती हुई उसकी भयभीत ऐसी करुण वाणी सुनकर स्थावर लिंग रूपी अरुणाचल से सहसा एक धनुर्धारी व्याध का आविर्भाव हो गया। उस व्याध को देखकर ब्रह्मा का मोह नष्ट हो गया।9 तब, प्रसन्न हृदय, कमल योनि ब्रह्मा ने अतीव विनय के साथ अरुणाचल के अधिपति को प्रणाम करके कहा किहे शरण्य! हे पिनाकिन! आप समस्त पापों का नाश करते हैं। आपको प्रणाम!

आप अरुणाचल रूप धारण करके भक्तजन के वशीभूत हो गए हैं आप मंगल करते हैं आप अपने तेज द्वारा मेरे इस कलुषित शरीर का नाश करिए ।10

शिव ने करुणार्द्र होकर कहा की हे ब्रह्मा! तुम समस्त दोषों के उपशमार्थ दूर रहकर अरुणाचल नामक मेरे तेजस लिंग की आराधना करो। देखो अरुणाचल का दर्शन करने मात्र से मानव गण के वाचिक मानसिक एवं कायिक त्रिविध? दोष नष्ट हो जाते हैं। प्रदक्षिणा प्रणाम स्मरण अथवा स्तव मात्र से यह अरुणाचल मानव के सभी पापों का नाश कर देते हैं। कैलाश मेरु शिखर कलाद्री सभी स्थानों में में दृश्यमान होता हूँ। तथापि अरुणाचल मेरा शरीर है इसका शिखर देखने से ही मानव के सभी पाप दूर होते हैं।

विनश्यतिक्षणात्सर्वमरुणाचलदर्शनात। प्रदक्षिणानमस्कारैः। स्मरणैरर्चनैः स्तवैः।।

अरुणाद्रिरयं नृणा सर्वकल्मषनाशनः। कैलासे मेरुशृंगे वा स्वस्थानेषु कलाद्रिषु।।11

विश्वनाथ की वाणी के अनुसार उनके द्वारा बताए गए ब्रह्म सरोवर में स्नान करके ब्रह्मा ने अरुणाचल रूप में स्थित महेश्वर का पूजन किया और दुरितों को दूर करके अपना आधिपत्य प्राप्त किया।

षष्ठ अध्याय में, कल्प के समाप्त होने के उपरांत भी सोए रह गए हरि के द्वारा हर के कहने से अरुणाचल पहुंचकर शंभू की आराधना करने का वर्णन है, जहाँ निषाद आदि अंगों के साथ मूर्तिमान वेदों की प्रतिष्ठा करके हरि ने सैंकड़ों अप्सराओं का सृजन करके उनको आदेश दिया कि तुम लोग नृत्य गीत वादियों से अरुणाचल की सेवा करो। 12

स्कंद पुराण कार वर्णन करता है कि कमलनयन हरि ब्रह्म सरोवर में स्नान अरुणाचल का पूजन तथा प्रदक्षिणा करके पाप रहित हो गए। यहीं पर सूर्य द्वारा असुरों से पीड़ित होने पर, दक्ष शाप रूपी अग्नि से आक्रांत होने पर चंद्र द्वारा और ब्रह्मर्षि के शाप से पीड़ित होने पर अग्नि द्वारा अरुणाचल की प्रदक्षिणा, अरुणाचल का पूजन एवं सेवा कर के अपना अभीष्ट प्राप्त करने का उल्लेख किया गया है। इसी अध्याय में यह भी वर्णित है कि अरुणाचल की अर्चना करके देवराज इंद्र शेषनाग नाग गंधर्व सिद्ध अप्सरा दिगपाल तथा सुरगण ,आदित्य, भग तथा वाणी, पुष्कर नामक गंधर्व, एक पैर वाले मुनि, इन्द्रपुत्र बालि, राजा भरत, सरस्वती, सावित्री श्री भूमि तथा समस्त नदियों ने अरुणाचल की उपासना करके सभी कष्टों से और पापों से मुक्ति प्राप्त की। यहां अरुणाचल के चारों ओर पवित्र वेणा नदी प्रवाहित

होती रहती हैं। अरुणाचल के वायव्य देश में वायु तीर्थ स्थित है, पर्वत के उत्तर भाग में कौबेरतीर्थ है, ईशान कोण में उत्तम ऐशान तीर्थ है, तदनंतर ब्रह्म तीर्थ है। गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु, कावेरी, शोण नदी पूर्व से क्रमशः स्थित होकर इस ब्रह्म तीर्थ की रक्षा करती हैं। जल वाली दिव्या तथा पार्थिवी अनेक नदियां अद्भुत होती रहती हैं। अरुणाचल पर्वत के दक्षिण भाग में अगस्त्य तीर्थ है 13, उत्तर भाग में दिव्य शुभ जल वाला वशिष्ठ तीर्थ, पूर्वोत्तर में महातीर्थ गंगा विद्यमान है ।14

अरुणाचल के निकट जिस ब्रह्म तीर्थ का वर्णन किया गया है वहां जाने से ब्रह्म हत्या पाप का नाश हो जाता है अग्रहायण मास में पितामह ब्रह्मा ब्रह्मलोक से यहां आकर नित्य स्नान करते हैं। इस ब्राह्मण तीर्थ के निकट ही सेवा महातीर्थ है।15 ब्रह्म कपाल के साथ रुद्र ने यहां स्नान किया था।16 आग्नेय कोण की ओर आग्नेय तीर्थ स्थित है, दक्षिण पूर्व की ओर अद्भुत वैष्णव तीर्थ है, इस तीर्थ में स्नान करने वाले के समस्त रोग निर्मूल हो जाते हैं। उत्तर में पावन आश्विन तीर्थ स्थित है। इस पर्वत के दक्षिण में पांडव तीर्थ है। पूर्व काल में पांडवगण इस तीर्थ में स्नान करके पृथ्वी के नायक हो गए। इस अरुणाचल पर्वत के सभी ओर तीर्थ हैं। इनमें से पूर्व दिशा वाले तीर्थ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं। इनमें स्नान करके लक्ष्मी ने उत्तम पुरुष विष्णु को प्राप्त किया था। पूर्व काल में इसके उत्तर में एक पावन स्कंद नदी स्थित थी यहां स्नान करके स्कंद कुमार ने विपुल बल प्राप्त किया था। पश्चिम दिशा में श्रेष्ठ विख्यात कुंभ नदी है। गंगा अरुणाचल शैल के मूल में, यमुना गमन देश में तथा सोमोद्भवा नदी शिखर देश में सेवा करती हैं।

मार्कण्डेय ऋषि ने कहा कि अरुणादीश के चतुर्दिक हजारों तीर्थभेद दृष्टिगोचर होते हैं। अरुणाचल रुपी शंकर की आराधना करने से अतुलित पुण्य राशि प्राप्त होती है। अरुणाचल आराधना करके बड़े-बड़े पापियों के पाप दूर हो जाते हैं। अरुणाचल की प्रदक्षिणा करके श्रेष्ठ पद प्राप्त हो जाता है। यह साक्षात परमेश्वर स्वरूप अरुणाचल सुमेरु कैलाश मंदिर से भी अधिक रूप में ऋषि गण को मान्य है। यह दक्षिण का कैलाश है अन्य सभी क्षेत्रों में शरण से सिद्धि लाभ होता है। इस अरुणाचल क्षेत्र में स्मरण मात्र से सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

References

1. जगद्गुरु रामानुजाचार्य आचार्यपीठं अधिपति स्वामी श्री राघवाचार्य महाराज.स्कन्दपुराण महेश्वर खंड अनुशीलनएपृष्ठ.1
2. प्रथमोऽध्यायःएमाहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.851.श्लोकसं0 .1
3. द्वितीयोऽध्यायःएमाहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.859.श्लोक सं0.30.33
4. द्वितीयोऽध्यायःएमाहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.860.श्लोक सं0.47
5. द्वितीयोऽध्यायःएमाहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.861श्लोक सं0.54
6. पञ्चमोऽध्यायएमाहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.878.श्लोक सं0.34.36
7. पञ्चमोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.878.श्लोक सं037 .39
8. पञ्चमोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.879 .श्लोक सं055 .56
9. पञ्चमोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.879 .श्लोक सं0.57 .58
10. पञ्चमोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.880.श्लोक सं0.66
11. पञ्चमोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.880 .श्लोक सं0.66.67
12. द्दषष्ठोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.883 .श्लोक सं0.27.29
13. द्दषष्ठोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.888 .श्लोक सं0.100कृ102
14. षष्ठोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.888 .श्लोक सं0.103
15. षष्ठोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.888 .श्लोक सं0.105
16. षष्ठोऽध्यायए माहेश्वरखंडए अरुणाचल महात्म्यए स्कन्द महापुराण. पृष्ठ.889 .श्लोक सं0.110